© 2019 IJSRST | Volume 6 | Issue 3 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

भारतीय संस्कृति का रक्षक : दाराशिकोह

डॉ. विनय कुमार पाण्डेय
प्रवक्ता (संस्कृत) +2 उच्च विद्यालय पाथुरिया,
बोकारो, झारखण्ड।

शोध आलेख सार – उपनिषदों के प्रचार–प्रसार में दाराशिकोह का नाम अग्रगण्य है। संस्कृत के विद्वानों को उसने आश्रय दिया और उनकी सहायता से दाराशिकोह ने भगवत् गीता और 50 उनिषदों का फारसी में अनुवाद किया और भक्तिगीत लिखा। संक्षेप में यहीं कहा जा सकता है कि उस समय की उदारवादी प्रवृत्तियों का वह केन्द्र हो गया और हिन्दुओं की यह धारणा हो गयी कि वह अकबर की आत्मा का अवतार है। आगामी सन्तति के लिए दाराशिकोह का नाम दर्शनशास्त्र के पण्डित का प्रतीक बन गया।

मुख्य शब्द – संस्कृत, दाराशिकोह, उपनिषद्, उदारवादी, हिन्दू।

मु. दाराशिकोह का जन्म 20 मार्च 1615 ई0 को अजमेर में हुआ था। आरम्भ में दो पुत्रियों के बाद युवराज शाहजहाँ ने अजमेर में ख्याजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्ला अलेहे की दरगाह पर प्रार्थना की थी और उन्हीं के आशीर्वाद से दारा का जन्म हुआ था। वह अपनी माता की तीसरी सन्तान तथा प्रथम पुत्र था। सम्राट जहाँगीर ने अपने पुत्र के इस उत्तराधिकारी का नाम दाराशिकोह रखा और अनेक महापुरुषों ने उस बालक में राजसिंहासन के सम्भावित उत्तराधिकारी के दर्शन किये।[1] सम्राज्य के प्रथम पुष्प के रूप में इस धन्य भाग्य का स्वागत हुआ। दारा के अन्य भाई थे– शाहशुजा, औरंगजेव और मुरादवख्स तथा दो बहने थी–जहाँनारा और रौशनआरा। वास्तव में शाहजहाँ और मुमताज के वैवाहिक सम्बन्ध को लगातार होने वाली पर्याप्त सन्तति ने कृतार्थ कर दिया। उनकी चौदह सन्तानों में दो पुत्रियों और चार पुत्रों के भाग्य मे यह बढ़ा था कि इतिहास के अत्यन्त दुःखमय नाटकों में से एक में वे अपना अभिनय करें।

दाराशिकोह की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा के लिए योग्य गुरु नियुक्त किये गये। इतिहासकारों का मानना है कि मुल्लाह अब्दुल लतीफ की देखरेख में दाराशिकोह ने कुरआन मजीद, हदीस और फारसी काव्यों का

गहन अध्ययन किया।[2] किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि मु0 दाराशिकोह ने अपने किसी भी ग्रन्थ में मुल्लाह अब्दुल लतीफ सुल्तानपुरी का नाम नहीं लिया है। मुगलकाल में शाहजादों के लिए सुलेख और चित्रकारो की विधा भी आवश्यक समझी जाती थी। सुलेख विघा के मर्मज्ञ महान् मीर कजमीनी के शिष्य मुल्लाह अब्दुल रशीद से शिक्षा ग्रहण की[3]। संसार में नस्ता लीक सुलेख विधा में जिनकी समानता करने वाला कोई अन्य न था। दाराशिकोह ने नस्ता लीक सुलेख के क्रम को आगे बढाया जिसके नमूने आज भी द्रष्ट्व्य है।[4] सम्राट शाहजहाँ ने सुलेख तथा पत्र लेखन के लिए अबुल फजल को निर्दिष्ट किया था जो उस समय का आदर्श तथा दुस्साध्य व्यक्ति था।

मु. दाराशिकोह ने चित्रकला की विधा किस विद्वान् से ग्रहण कि इसका विवरण अप्राप्य है फिर भी उसके गुरु युवराज शाहजहाँ के दरबार से सम्बन्धित रहें होगें। युवराज दाराशिकोह ने सफीनतुऽल औलिया के गुरु मीरज शेख की तथा अपनी दूसरी पुस्तक सकीनतुऽल औलिया में शेख अहमद देहलवी का नाम आदर के साथ लिया है, किन्तु उसने ज्ञान और प्रतिष्ठा के जो स्थान प्राप्त किया उससे यह परिणाम निकालना उचित न होगा कि उसने केवल तीन गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की।

दाराशिकोह आजीवन विद्यार्थी रहा। अध्ययन और कल्पना के प्रति असंतुलित अनुराग था। उसका चित्त गूढ रहस्यवादप्रिय था और जहाँ पर लोगों को कठोर लक्ष्य प्राप्त होते थे। वहा वह अलंकारो की खोज में रहता था कुरान के अध्ययन में उसने शास्त्रीय सम्प्रदाय के प्राचीन विद्वानों की टीकाओं को अस्वीकृ त कर दिया उसको अरबी प्राधान्यता से घृणा थी क्योकि उसकी दृष्टि में उससे असहनशीलता और मानसिक निष्फलतां की उत्पत्ति होती थी। मु. दाराशिकोह ने इस्लामी कानून के अध्ययन को स्वप्न में भी इच्छा नहीं की।

संस्कृत के विद्वानों केा उसने आश्रय दिया और उनकी सहायता से दाराशिकोह ने भगवत् गीता और 50 उनिषदों का फारसी में अनुवाद किया और भक्तिगीत लिखा। संक्षेप में यहीं कहा जा सकता है कि उस समय की उदारवादी प्रवृत्तियों का वह केन्द्र हो गया और हिन्दुओं की यह धारणा हो गयी कि वह अकबर की आत्मा का अवतार है। आगामी सन्तति के लिए दाराशिकोह का नाम

दर्शनशास्त्र के पण्डित का प्रतीक बन गया। सन्1629 में सामाज्ञी मुमताजमहल ने स्व. राजकुमार परवेज की पुत्री और दाराशिकोह ने विवाह का प्रस्ताव रखा जिसको शाहजहाँ ने ह्दय से समर्थन किया, किन्तु दुःख कि 7 जून 1731 की रात्रि के अकस्मात् साम्राज्ञी का देहान्त हो गया। राजकमारी जहाँनआरा की देखरेख में युवराज के विवाहोत्स की तैयारियाँ बड़े धूम धाम से की गयी, जैसी मृतक मुमताज की इच्छा हो सकती थी। कुल 32 लाख रुपये के व्यय में से16 लाख जहानआरा ने दिया था 2 लाख की

लागत से साचाक भव्य जुलूस में 11 नवम्बर 1632 को भेजा गया था। साथ में मृतक साम्राज्ञी की माता बड़ी बहन और फूफियाँ[5] थी। तीन माह बाद विवाहोत्सव हुआ। 1 फरवरी 1633 को रात्रि को हिनाबन्दी की रस्म के अवसर पर दीवाने खास के प्रांगण में विशाल सभा का आयोजन किया गया। मुमताज की मृत्यु के बाद पहली बार सम्राट ने उत्सव के वस्त्र धारण किये सहभोज में प्रधानपद धारण किया और राजभवन में पुनः संगीत होने की अनुमति प्रदान की। दूसरे दिन राजाज्ञानुसार युवराज दाराशिकोह अपने तीनों भाइयों के साथ घोड़े पर सवार होकर दीवाने आम में आया, दण्डवत् प्रणाम करने के उपरान्त जब दाराशिकोह सिंहासन के सम्मुख उपस्थित हुआ, सम्राट ने मोतियों की एक माला उसके गले में पहना दी और दारा के शिर पर वहीं सेहरा बाँध दिया जो उसके पिता जहाँगीर ने उसके शिर पर मुततताजमहल से उसके विवाह की रात्रि पर बाँधा था। जब रात्रि के दो प्रहन और छ घड़ियाँ बीत गयी, तब उस समय सर्वाधिक मतान्ध मुल्ला काजी मुहम्मद इस्लाम को विवाह संस्कार में अनुष्ठान के लिए बुलाया गया । यह अनुष्ठान सम्राट की उपस्थिति में सम्पादित हुआ। बधू के कापीन के लिए उसने वही धन निश्चित किया। जिसकी प्रतिज्ञा मुमताज से की थी।[6]

नादिरा के प्रति दाराशिकोह का प्रेम मुमताज के प्रति शाहजहाँ के प्रेम से कम निश्चल और रोमांचक न था और न ही शारीरिक और नैतिक सौन्दर्य में तथा सहनशीलता और भक्तिमता में नादिरा अपनी सास की तुलना में कम थी। वे जीवन में कभी अलग नहीं हुए और दुर्भाग्य ने उनके प्रेम को और भी चमका दिया।

नादिरा वेगम से 19 जनवरी 1634 ई0 को आगरे में एक पुत्री उत्पन्न हुई जिनकी वाल्यावस्था में ही मृत्यु हो गयी।[7] तदन्तर 6 मार्च 1635ई0 में एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम सुलेमान शिकोह रखा गया।[8] 1638ई में उत्पन्न पुत्र का नाम मेहरशिकोह रखा गया।[9] 26 अगस्त 1641ई0 में एक पुत्री उत्पन्न हुई उसका नाम पाक निहाद बानो बेगम रखा गया।[10] 6 अगस्त 1643ई0 में तीसरा पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम मुमताज शिकोह रखा गया[11] और चौथा पुत्र शिपिहार शिकोह का जन्म 3 अक्टूबर 1644ई को हुआ।[12] सम्राट शाह जहाँ अपने प्रत्येक पौत्र या पौत्री के जन्म के बाद दारा के घर जाता था और प्रत्येक अवसर पर जन्मोत्सव के लिए 2 लाख रुपये देता था। कुछ विद्वनों का मानना है कि जहाँजेबानू और अमलुन्निशा नामक दो पुत्रियाँ नादिरा बेगम से और उत्पन्न हुई थी।

युवराजदाराशिकोह इलाहाबाद बनारस, पंजाब, गुजरात और काबुल आदि अनेक सूबों का महाराज्यपाल पद ग्रहण किया था। उसके जीवन में इलाहाबाद और बनारस की सूवेदारी का महत्वपूर्ण स्थान है। बनारस में ही अपने प्रसिद्ध स्मारक ग्रन्थ सिर्रे अकबर को पूर्ण किया था। जिसमें 50 उपनिषदों का

फारसी अनुवाद है। राजकुमार की दृष्टि में उसके सम्मान का कारण यह है कि यह हिन्दू विधा का केन्द्र और सूफी फकीर शेख मुहीबुल्ला इलाहाबादी का जन्म स्थान था। युवराज दाराशिकोह अपना अधिकांश समय दरबार में ही व्यतीत करता था और सम्राट् शाहजहाँ के साथ जाया करता था।

युवराज दाराशिकोह अपने पिता शाहजहाँ के समय में बड़े मनसब पर रह चुका था। 5 अक्टूबर 1633 ई में दाराशिकोह को 12 हजार जाट और 6 हजार सवार का पद प्राप्त हुआ था। 5वर्षो में कई उन्नतियाँ प्राप्त कर उसका पद 20 हजार जाट और 10 हजार सवार हो गया। अपनी प्राणघातक बीमारी के ठीक पहले सम्राट् शाहजहाँ ने दारा के पद को 50 हजार तक बढा दिया और अपने आंशिक स्वस्थ्य लाभ के पीछे जब उत्तराधिकर युद्ध क्षितिज में वृद्धि को प्राप्त कर रहा था, उसने दारा को रुग्ण अवस्था के समय उसकी पितृ भक्ति और सहृदय सेवा सूश्रुषाकारण 60 हजार जाट और 40 हजार सवार का असाधारण पद प्रदान किया।

सन् 1657ई0 में शाहजहाँ दिल्ली में बीमार हो गया और उसके बचनें की आशा नहीं रह गयी थी इसी बीच यह अफवाह फैल गयी की शाहजहाँ मर गया है उसी समय काबुल में शुजा, गुजरात में मुराद, और दक्कन में औरंगजेब की सूवेदारियाँ थी। शुजा से निपटने के लिए सुलमान शिकोह को भेजा गया और इधर मुराद और औरगंजेब मिलकर आगरे की तरफ चल दिये।

29मई 1658 में आगरे के निकट सामूगढ में दोनो सेनाओं की मूठभेड़ हुई दाराशिकोह पराजित हुआ और वहा से भागकर दिल्ली पहुँचा। शाहजहाँ ने दारा से यह प्रार्थना की कि वह आकर अन्तिम बार भेट कर लै, लेकिन दारा इस प्रार्थना के अस्वीकृत करते हुए लिखा–– मेरा लज्जित मुख देखने की इच्छा आप छोड़ दे। हुजूर से मेरी केवल यह प्रार्थना है कि इस विक्षिप्त तथा अर्धमृत मनुष्य को उसके सम्मुख उपस्थित लम्बी यात्रा के निमित्त आप विदाई का शुभ आशीर्वाद दें। पुनः दिल्ली से लाहौर की तरफ बढ़ और सिन्धु को पारकर काबीलों के प्रदेश में प्रवेश किया, 6 जून 1659 में अफगान में नादिरावेगम की मृत्यु हो गयी। अपनी मृतक प्रेयसी के प्रति दारा का यह विचार हुआ कि लाहौर में मिया मीर की कब्र के पवित्र सामीप्य में नादिरा का शव दफन दिया जाय और इसके लिए सरदार गुल मुहम्मद को सुपुर्द किया।

इसके दूसरे दिन शिपिहर शिकोह के साथ दारा 9 जून 1659 को बेलन की घाटी की ओर बढ़ा जहाँ धूर्त मलिक जीवन से मुलाकात हुई और उसने दारा और शिपिहर को वन्दी बना लिया और 23 अगस्त 1659 ई को औरंगजेब के हवाले कर दिया।

मंगलवार 29 अगस्त को औरंगजेब ने यह आज्ञा दी कि बन्दी राजकुमार और उसके पुत्र का एक विशाल सैनिक जुलूस में अपमान सूचक प्रदर्शन किया जाय। बन्दियों को मोटे और मैले कपड़े पहनाये गये उनके शिरो पर नाममात्र की पगडियाँ थी। जिसके उपर एक फटा पुराना काश्मीरी शाल लपेटागया था। जो उस शाल के सदृश था, जो नीचतम कोटि के लोग ओढ़ते थे। वृद्ध हथिनियों के पीठ पर खुले हौदे में राजकुमार को बैठा दिया गया, जिनके पैरों में बेडियाँ पड़ी हुई थी और गुलाम नजरबेग उनके पीछे बैठा हुआ था।

अगस्त के सूर्य की तीब्र धूप से आनवृत दारा को उसकी पूर्व महिमा तथा गौरव के स्थानों से होकर जाना पड़ा अपमान की कटुता के कारण उसने अपना शिर तक न उठाया और न किसी और दृष्टिपात किया, परन्तु वह एक कुचली हुई टहनी की भाँति बैठा रहा। केवल एक बार वह आँख उठाकर देखा जबकि एक दीन भिखारी सड़क के पास से चिल्ल उठा था कि हे दारा जब आर स्वामी थे आप मुखे सदैव भिक्षा देते थे, आज मै भलिभाँति जानता हूँ कि आप के पास देने के लिए कुछ भी नहीं है।[13] फटे पुराने चिथडे धारण किये हुए राजा दीन दाराशिकोह की स्थिति थी। सिवाय एक बूँद आँसू और संवेदना की एक आह को दुखियों को देने के लिए अब शायद उनसे पास कुछ न था, तब भी उसने अपना हाथ चलाया और शाल के उतार कर उसने भिखारी की ओर फेक दिया।

फ्रांसीसी वैद बर्ने जो इस घटना का साक्षी था वह करता है कि ''इस अपमान जनक अवसर पर एकत्र जन समुदाय असंख्य था और सर्वत्र मैने देख कि अति मर्मस्पर्शी भाषा में लोग दारा के भाग्य पर रोदन और क्रन्दन कर रहे थे, प्रत्येक दिशा में मुझकों विदारक तथा दुःखकारक आक्रोश सुनायी पड़े क्योकि भारतीय जनता का हृदय बहुत कोमल है पुरुष बालक और स्त्रियाँ इस प्रकार क्रन्दन कर रहे थे कि जैसे कि कोई घोर विपत्ति उन पर आ पड़ हो।..... परन्तु कुछ भी हलचल न हुआ किसी ने भी तलवार न खीची कि अपने प्रेमास्पद तथा हृदय द्रावक राजकुमार की रखा करें।[14]

सन्दर्भ

1. पादशाहनामा 1–301। अजक्ते सलीह में यह भी है कि जब रात्रि के 12 बजे और 42 पल बीत चुके थे।
2. पादशाहनामा 1 ब 344–345
3. 1928 के भारतीय ऐतिहासिक प्राचीन पत्र आयोग के नागपुर अधिवेशन से सम्बन्धित प्रदर्शनी की प्रदशिति वस्तुओं में अब्दुर्रसीद दायलेमी से सुलेख का नमूना था।

4. पटना की औरियन्टल पब्लिक लायब्रेरी पुस्तकालय।
5. पादशाहनामा 1 अ 453
6. पादशाहनामा 1 अ 458–59
7. पादशाहनामा 1 ब 3.9.10
8. पादशाहनामा 1 ब 73–74
9. पादशाहनामा 2, 101
10. पादशाहनामा 2, 245
11. पादशाहनामा 2, 337
12. पादशाहनामा 2, 338
13. औरंगजेब का इतिहास 1तथ 2 पृष्ठ 543
14. वर्ने की यात्राएँ। पृष्ठ 99–100